श्लोक नं॰ 17

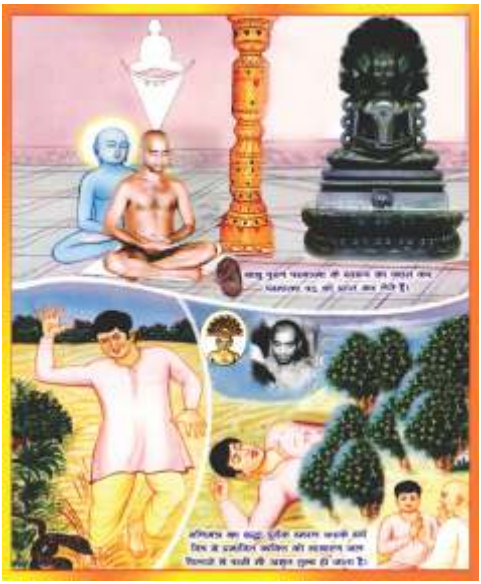

धारणा शक्ति का फल

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद बुद्धया
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप्यमृतमित्यनु चिन्त्यमानम्
किं नाम नो विषविकार मपाकरोति॥ 17॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज – कहाँ गए चक्री...)

अभेद भक्ति से योगीजन जब तुमको ध्याते।
निश्चय से मैं शुद्धातम हूँ यह चिन्तन करते॥
दृढ़ श्रद्धा से केवल जल को अमृत जो माने।
चिन्तन से वह जल अमृत सम विष को ही नाशे॥
नाथ आपके नाम मन्त्र से नर भगवन् बनता।
कर्म रूप विष ध्यानामृत से पलभर में नशता॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 17॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं।

यतीन्द्रांश्चारणान् पोतसमान् नृणां भवार्णवे।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं चारणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

चाल-शेर

1. **आत्मा बने परमात्मा जिनदेव दर्श से।**
बच जाए भक्त शीघ्र महा कालसर्प[1] से॥
हर एक श्वास-श्वास में जिन नाम ही जपूँ।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ॥ 897॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'आत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **माना सभी के आप ही कल्याण धाम हो।**
अपने ही खास दास का भगवन् प्रणाम हो॥ हर०॥ 898॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **मद मोह राग आग में तू क्यों झुलस रहा।**
आ जा प्रभु की शर्ण ज्ञान-सिन्धु हैं यहाँ॥ हर०॥ 899॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **नीरज खिले सरोवरों में महक दे रहे।**
भवि आपकी समीपता से शान्ति पा रहे॥ हर०॥ 900॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **ऋषिराज मुनिराज ध्यान आपका करें।**
वे शीघ्र मोह राज की विराधना करें॥ हर०॥ 901॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **भिन्नातिभिन्न आतमा से जड़ पदार्थ हैं।**
जिनदेव के वचन से ही जाना यथार्थ है॥ हर०॥ 902॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **रच स्तोत्र पार्श्वनाथ का उपकार है किया।**
यतिराज कुमुदचन्द्र को हमने नमन किया॥ हर०॥ 903॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. मृत्यु रूपी सर्प

8. नित्यं ही जपूँ नाम मैं निष्काम हो सकूँ।
बाँधे जो मैंने पूर्व पाप कर्म धो सकूँ॥
हर एक श्वास-श्वास में जिन नाम ही जपूँ।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ॥ 904॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सम्यक्त्व ज्ञान त्याग से ही सिद्ध हो गए।
तीनों ही लोक में प्रभु प्रसिद्ध हो गए॥ हर०॥ 905॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. दस धर्म के धारी जिनेश प्रार्थना सुनो।
हूँ नन्त काल से दुखी अब वेदना हरो॥ हर०॥ 906॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. भेदन किया गिरि कर्म का प्रभु केवली हुए।
वसु कर्म नाश के ही आप सिद्ध हो गए॥ हर०॥ 907॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. दर्शन करें जो आपके निज दर्श वे करें।
संसार अगम सिन्धु से ही शीघ्र वे तिरें॥ हर०॥ 908॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. बुद्ध्यादि अष्ट ऋद्धियों के आप नाथ हैं।
सिद्धि की कामना से प्रभु दूर आप हैं॥ हर०॥ 909॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बुद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. ध्यानी व ज्ञानियों में आप ही महान हो।
हो जाएँ पूज्य आपको करते प्रणाम जो॥ हर०॥ 910॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. ध्यानाग्नि में वसु कर्म काष्ठ को जला दिया।
मुरझाया ज्ञान पुष्प था उसको खिला दिया॥ हर०॥ 911॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तोरण बँधे रंगोलियाँ दीपक सजे हुए।
प्रभु आगमन में अष्ट द्रव्य हाथ में लिए॥
हर एक श्वास-श्वास में जिन नाम ही जपूँ।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ॥ 912॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. जिनधर्म की प्रभावना हो नाथ भक्ति से।
शाश्वत सुखी हो जीव द्रव्यकर्म मुक्ति से॥ हर०॥ 913॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. नेवज सु-दीप धूप फल जलादि द्रव्य ले।
मैं पूजता हूँ अष्ट द्रव्य को मिलाय के॥ हर०॥ 914॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. इन्द्रादि धर्म की सभा में शोभते सदा।
प्रभु आपके चरण में हो विनम्र सर्वदा॥ हर०॥ 915॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भक्ति के पात्र में प्रभु जी ज्ञान दीजिए।
यह भक्त है अबोध नाथ विज्ञ कीजिए॥ हर०॥ 916॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वचनों से रात-दिन प्रलाप व्यर्थ ही किया।
ना मौन रख सका नहीं स्वाध्याय भी किया॥ हर०॥ 917॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तीनों जगत के नाथ आप ईश कहाते।
अतएव नाग नर सुरेन्द्र शीश झुकाते॥हर०॥ 918॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ती' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. हम भव्य जीव आपको अपलक निहारते।
क्षण मात्र में सहस्र विघ्न शीघ्र टालते॥हर०॥ 919॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. भव-भव के संकटों से आप ही बचाइए।
बलहीन भक्त आपका कर थाम लीजिए॥
हर एक श्वास-श्वास में जिन नाम ही जपूँ।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ॥ 920॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. भगवत् हो आप भक्त मैं हूँ द्वार पे खड़ा।
तुम-सा न जग में और कोई है यहाँ बड़ा॥ हर०॥ 921॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रण है यह आज भक्त का न दर से जाएगा।
बन जाओ खिवैया ये भक्त तैर जाएगा॥ हर०॥ 922॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भावों से नाथ आपको नित अर्घ्य चढ़ाते।
करके प्रभु आराधना हम हर्ष मनाते॥ हर०॥ 923॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. विभवः हुए विमुक्त भव से नाथ आप ही।
वैभव निजातमा का प्राप्त कर लिया सभी॥ हर०॥ 924॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. पावन घड़ी है आज आपकी शरण मिली।
उपयोग शुभ हुआ है हृदय की कली खिली॥ हर०॥ 925॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. नीराग होके आपने निर्वाण पा लिया।
जो शरण आ गया वही निहाल हो गया॥ हर०॥ 926॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. यम जीत आपने विजय का बिगुल बजाया।
वसु कर्म सैन्य को प्रभु ने पल में हराया॥ हर०॥ 927॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. महिमा सुनी मैं आपकी पूजन को आ गया।
यह दिव्य रूप वीतराग मन को भा गया॥
हर एक श्वास-श्वास में जिन नाम ही जपूँ।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ॥ 928॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. है प्राप्य मोक्ष तत्त्व ही यह जान लिया है।
प्रभु आपके वचन को मैंने मान लिया है॥ हर०॥ 929॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मृत्युञ्जयी हो आप अब न जन्म धरेंगे।
अवतार आप लें नहीं अब शिव में रहेंगे॥ हर०॥ 930॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तत्त्वज्ञ आप हो तथापि मान न करें।
जीवन प्रभु का धन्य है प्रणाम हम करें॥ हर०॥ 931॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मिथ्यात्व का समूल क्षय हो आप चरण में।
दीक्षा लूँ मुनिराज की प्रभु आप शरण में॥ हर०॥ 932॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. प्रत्यय जो चार बन्ध के उनका विनाश हो।
मिथ्यात्व आदि छोड़ मोक्ष में ही वास हो॥ हर०॥ 933॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. अनुसार मैं चलूँ जो प्रभु आपने कहा।
यह भक्त का सु-निश्चय प्रभु आज से रहा॥ हर०॥ 934॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. चिन्तामणि से श्रेष्ठ आप जग में हो महान।
अतएव तीन लोक करें आपका गुणगान॥ हर०॥ 935॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. सुर नृत्य गान कर रहे जिनराज के द्वारे।
करते प्रभु से प्रार्थना भव-सिन्धु उबारे॥ हर०॥ 936॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. माणिक औ मोतियों से चौक पूरती रहीं।
सब नारियाँ प्रभु की बाट जोहती रहीं॥
हर एक श्वास-श्वास में जिन नाम ही जपूँ।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ॥ 937॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. हैं नम्य आप ही जिनेश ध्यान योग्य हैं।
सौभाग्य से विधान का पाया सुयोग है॥ हर०॥ 938॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. किंपाक फल की भाँति जग में सुख नहीं कहीं।
शाश्वत सुखी हैं आप जहाँ आठवी मही॥ हर०॥ 939॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. ना कोई आपसा न वीतरागी है यहाँ।
अतएव छोड़ आपको मैं जाऊँ अब कहाँ॥ हर०॥ 940॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. मण्डप रचा विधान का मैं अर्चना करूँ।
बस यूँ ही दिवस-रात मैं आराधना करूँ॥ हर०॥ 941॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. नोकर्म द्रव्य भावकर्म को जला दिया।
भटके हुए शिवराहियों को पथ दिखा दिया॥ हर०॥ 942॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. विचरण किया है आपने निज ज्ञान बाग में।
यह भक्त जल रहा है नाथ राग आग में॥ हर०॥ 943॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. षट्पद[1] ज्यों पुष्प गन्ध हेतु गूँजता रहे।
यह भक्त सिद्धपद के हेतु पूजता रहे॥ हर०॥ 944॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. विभ्रम से बार-बार मैं भव-भव भटक रहा।
अब भ्रम विनाशने प्रभु की शरण आ गया॥ हर०॥ 945॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. भौरा

50. कारण है आप मोक्ष के सहाय कीजिए।
नैया है जीर्ण नाथ मुझे तार दीजिए॥
हर एक श्वास-श्वास में जिन नाम ही जपूँ।
तेईसवें तीर्थेश पार्श्वनाथ को नमूँ॥ 946॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. रहते हैं सिद्धधाम जहाँ नन्त सिद्ध हैं।
अविरुद्ध सिद्ध देह रहित सर्व शुद्ध हैं॥ हर०॥ 947॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. मन है यदि मलीन तो धर्मी न कहाता।
जिनराज कहें वह कभी सम्यक्त्व न पाता॥ हर०॥ 948॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. पावन बना परम प्रभु की शरण को पाकर।
वे हो गए हैं मुक्त भक्त भक्ति रचाकर॥ हर०॥ 949॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कस्तूरी मृग की नाभि में ही ज्यों बसी रहे।
मेरे हृदय में आपकी मूरत बसी रहे॥ हर०॥ 950॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रोगी दुखी जनों की जो सेवा सदा करे।
निस्वार्थ भावना से स्वर्ग सौख्य को वरे॥ हर०॥ 951॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तिहुँ-लोक में जिनेन्द्र आप ही महान हैं।
अतएव आपको मेरा शत-शत प्रणाम है॥ हर०॥ 952॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

श्रद्धा से जल को सुधा मान विष हरण करे।
मैं शुद्ध हूँ यह भावना से सिद्ध-पद वरे॥
जिन नाम मन्त्र जाप से सब पाप ही टले।
पूर्णार्घ्य पार्श्वनाथ के चरण में ले चले॥17॥

ॐ ह्रीं श्रीं संसारविषसुधोपमाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 18

वीतरागता में हरिहरादि का वर्णन

त्वामेव वीत-तमसं परवादिनोऽपि
नूनं विभो! हरि-हरादि-धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण ॥18॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

रोग पीलिया वाला सम्यक् देख नहीं पाता।
धवल शंख भी विविध रंग का ही उसको दिखता॥
वीतराग प्रभु को जब देखे मिथ्यामत वाला।
विष्णु आदि की परिकल्पना करता बेचारा॥
यह विपरीत मान्यता भव-कानन में भटकाती।
सम्यक् श्रद्धा भक्ति ही शिव मंजिल पहुँचाती॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥18॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं।

मुनीन् प्रज्ञाश्रमणाख्यान्, सर्वप्रज्ञागुणान्वितान् ।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञाश्रमणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सोरठा

1. **जित्वा मोह प्रधान, शेष कर्म भी नाशकर।**
हुए पार्श्व भगवान, वन्दन मम स्वीकारिए॥ 953॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **मेरु समान अकंप, उपसर्गों में भी रहें।**
हुए शीघ्र शिवकन्त, अतः अर्चना मैं करूँ॥ 954॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **वक्ता श्रेष्ठ जिनेश, असंख्य जन जिनध्वनि सुने।**
श्रोता बनूँ विशेष, सुनूँ दिव्य प्रभु देशना॥ 955॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **वीर अन्त तीर्थेश, हुए आपके बाद ही।**
अरज सुनो पूर्णेश, बुला लीजिए शिवमहल॥ 956॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **तरणि समान जिनेन्द्र, अगणित भव्य तिरा रहे।**
पद में झुके सुरेन्द्र, भव-समुद्र से तैरने॥ 957॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **तप कर कर्म जलाय, अपने ही पुरुषार्थ से।**
सर्व विभाव हटाय, सिद्ध रूप कब निरख लूँ॥ 958॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **मनमोहक जिन रूप, लखकर मन आनन्द है।**
चिन्मय चेतन भूप, भव्यों के सम्राट् जिन॥ 959॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. संवर निर्जर मोक्ष, आत्म हितङ्कर तत्त्व है।
पाना मुक्ती सौख्य, और नहीं कुछ चाहिए॥ 960॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. परमेष्ठी का रूप, नाथ आपमें झलकता।
अर्हत् सिद्ध स्वरूप, किया अनुभव आपने॥ 961॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रत्नाकर जिनराज, अनन्त गुण मणि से भरे।
तारो मुझको नाथ, आश करूँ मैं आपकी॥ 962॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वादी सारे जीत, प्रचार जिनमत का किया।
हुआ सर्व जग मीत, प्रभु के हित-मित वचन से॥ 963॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. दिव्यबोध दें नाथ, समरस पान करा दिया।
फिर शिवपुर प्रस्थान, किया आपने सिद्ध बन॥ 964॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. मनोकामना पूर्ण, होती है सद्भक्त की।
हो सब संकट चूर्ण, श्रद्धा रखने से सदा॥ 965॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. देहतोऽपि जिननाथ, शाश्वत मुक्ति पा चुके।
नाश किया भवताप, मम सन्ताप मिटाइए॥ 966॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. नूर[1] आपका देख, अचरज होता सर्व को।
अनेक में प्रभु एक, कोई न तुमसा जगत में॥ 967॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ज्ञानं दाता आप, मिला ज्ञान तव चरण में।
भक्त खड़ा नत माथ, हर लेना अज्ञान तम॥ 968॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. प्रकाश, ज्योति

17. विमल रूप धर श्रेष्ठ, लोक अग्र पर जा बसे।
तुम हो नाथ विशेष, बसे भक्त के हृदय में॥ 969॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. भोगी भोगे भोग, खोकर सुध-बुध आत्म की।
योगी धारे योग, मोक्ष तत्त्व की लगन ले॥ 970॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. हरियाली चऊ ओर, प्रभु विहार में हो रही।
भक्त खड़े कर जोड़, प्रभु प्रतीक्षा में सभी॥ 971॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. रिपु चउ घाति विनाश,अर्हत् पद को पा लिया।
पाकर सिद्धाकाश, अव्याबाध सुखी हुए॥ 972॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. हर्षोल्लासित भक्त, करके प्रभु आराधना।
जिनगुण पर आसक्त, ज्यों सुमनों से अलि रहे॥ 973॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. राग आग को छोड़, वीतराग पथ पर चले।
पर से नाता तोड़, स्वभाव में थिर हो गए॥ 974॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. दिग्भ्रमितों को नाथ, दिग्दर्शन तुमने किया।
अब तो चेतन जाग, जगा रहे श्री पार्श्व जिन॥ 975॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. निधि शाश्वत जिन पाय, त्रिभुवन में अनमोल है।
महिमा लिखी न जाय, सागर की स्याही भरूँ॥ 976॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. याचक बनकर भक्त, आया हूँ कुछ माँगने।
करिए भव से मुक्त, विनती यह स्वीकारिए॥ 977॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रणम्य हो जिनराज, पूज्य जनों से पूज्य हो।
भक्तों की अरदास, हो दर्शन प्रत्यक्ष अब॥ 978॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. पन्ना माणिक लाय, रत्नों से सुर पूजते।
प्रभु पद शीश नवाय, बड़भागी निज को कहें॥ 979॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. जनाः नमन्ति सर्व, पार्श्वनाथ भगवान को।
लगता हर-पल पर्व, नाथ आपके निकट में॥ 980॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. किंकर्त्तव्य विमूढ़, समझ न पाऊँ कुछ प्रभो।
पाना भवदधि कूल, पथदर्शक विभु आप हैं॥ 981॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. काल महा विकराल,उसका अन्त किया प्रभो।
सिद्धिवधू भरतार, नन्त काल तक हो गए॥ 982॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. चरम शरीरी आप, देह न धारेंगे कभी।
तन के कारण पाप, करता अज्ञानी सदा॥ 983॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. काली चाहे देह, मन काला ना तुम रखो।
कहें पार्श्व जिनदेव, रखना निर्मल आतमा॥ 984॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. महक रहा गुण बाग, स्वानुभूति शुभ गन्ध से।
करी कर्म की राख, मोक्ष तत्त्व प्रभु पा चुके॥ 985॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. लिख ना पाऊँ नाथ, गुण अनन्त हैं आपके।
अल्प रहा मम ज्ञान, शब्दों का भी ज्ञान ना॥ 986॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. भिगो दिए हैं नैन, वचनामृत से आपके।
ऐसे हैं जिन बैन, जिनवाणी जिन सम कही॥ 987॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. रीत न जानूँ नाथ, प्रीत कहो कैसे करूँ।
दिखते ना जिनराज, श्रद्धा से अवलोक लूँ॥ 988॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'री' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शल्य दूर कर तीन, रत्नत्रय को पा लिया।
हो निज में आसीन, पर से नाता तोड़कर॥ 989॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. सिवा आपके नाथ, कोई नहीं अपना यहाँ।
स्वारथ का सब साथ, कोई न सच्चा मीत है॥ 990॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तोयादिक वसु द्रव्य, लेकर मैं पूजा करूँ।
द्रव्य नहीं है दिव्य, किन्तु हृदय श्रद्धा भरा॥ 991॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. कदाऽपि मैं जिनराज, छोड़ूँ शरण न आपकी।
आएँ विघ्न हजार, प्राण तजूँ पर धर्म ना॥ 992॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. शंख बजे स्वयमेव, भवनवासि सुर के यहाँ।
जन्म लेय जिनदेव, तब सुर प्रभु कीर्तन करें॥ 993॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. खोया-खोया भक्त, रहता है संसार में।
लगता कहीं न चित्त, प्रभु गुण में ही खो रहा॥ 994॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मनोदशा है विचित्र, टिके न एक पदार्थ पर।
हो सम्यक्चारित्र, निज में मन थिर कर सकूँ॥ 995॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. गृहस्थपन का त्याग, करके अनगारी हुए।
किया स्वात्म गृहवास, जिसे कभी ना छोड़ना॥ 996॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. बाह्य परिग्रह छोड़, अन्तरङ्ग भी तज दिया।
निज से नाता जोड़, स्वात्म चतुष्टय में रमे॥ 997॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तेजस्वी छवि सौम्य, मनहारी सबको लगे।
अनुभवते प्रभु सौख्य, काल अनन्ता सर्वदा॥ 998॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. विषधर भी विष छोड़, आता है तव चरण में।
भविजन पाने बोध, क्रोध छोड़ आए शरण॥ 999॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. विनष्ट होय विकार, अविकारी मैं बन सकूँ।
इसीलिए जिन द्वार, आन खड़ा प्रभु चरण में॥ 1000॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. धड़कन में प्रभु नाम, श्वास-श्वास में जिन बसे।
जग को नश्वर जान, शरण लिया है आपका॥ 1001॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. वर्ष बिताये नन्त, किन्तु नहीं सुख पा सका।
चलकर प्रभु तव पन्थ,अब अक्षय सुख पा सकूँ॥ 1002॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. तृण सम वैभव त्याग, चले घोर वन में प्रभो।
बुझा राग की आग, वीतराग प्रभु हो गए॥ 1003॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विद्वानों से पूज्य, तुम सम ज्ञानी और ना।
ज्ञान आपका पूर्ण, युगपत् सबको जानते॥ 1004॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. पर्यायें त्रय काल, सहज ज्ञान में झलकती।
मिटा कर्म जंजाल, प्रभु सिद्धालय जा बसे॥ 1005॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. यथार्थ में जिनराज, आप सदा आत्मज्ञ हैं।
सर्वज्ञत्व व्यवहार, नय से कहते विज्ञ जन॥ 1006॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. ये रागादिक दोष, नाश किए प्रभु आपने।
प्रकट किया गुणकोष,भक्तों के भगवन् तुम्हीं॥ 1007॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. णर नारक पर्याय, धर-धर मैं भटका बहुत।
अब तव शरणा पाय, भ्रमण मिटे संसार का॥ 1008॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

पाण्डु[1] रोग से पीत, दिखे वस्तुएँ जीव को।
मिथ्यादृष्टि जीव, प्रभु में भी हरि देखता॥
मिथ्यातम को छोड़, सम्यक् श्रद्धा धार कर।
द्वय हाथों को जोड़, अर्घ्य चढ़ाऊँ चरण में॥ 18॥

ॐ ह्रीं श्रीं सर्वजनवन्द्याय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

1. पीलिया

श्लोक नं॰ 19

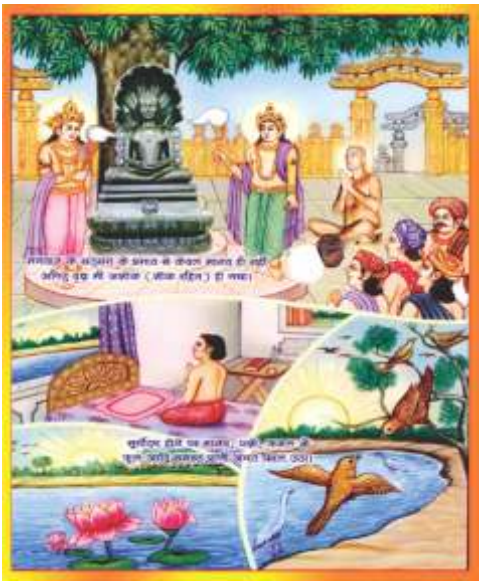

अशोक वृक्ष प्रातिहार्य

धर्मोपदेश-समये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः॥ 19॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

समवसरण में अतिशयकारी प्रातिहार्य होता।
वृक्ष आपकी समीपता पा शोक रहित होता॥
मनुष्य की तो बात दूर है तरु पाता साता।
सूर्योदय से जीवलोक क्या प्रकाश ना पाता॥
बड़भागी हैं जो प्रभुवर की समीपता पाते।
तरुवर से ही कालान्तर में जिनवर हो जाते॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 19॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं।

आकाशगामिनो धीरान्, कृत्स्नसत्त्वहितोद्यतान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगामिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. धर्माराधन करके मन में शान्ति मिलती है।
शास्त्र ज्ञान से आत्म-ध्यान की ज्योति जलती है॥ 1009॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मोह नाशकर मोक्षमहल में पहुँच गए जिनराज।
नाथ आप बिन कौन उतारे भवसागर से पार॥ 1010॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. परदेशी बन चौरासी लख योनि भटकता हूँ।
स्वदेश शिवनगरी कब आऊँ यही सोचता हूँ॥ 1011॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. देश-देश औ नगर-नगर में गूँजे प्रभु की जय।
क्योंकि प्रभु ने किया आठ ही दुष्कर्मों का क्षय॥ 1012॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. शव समान मैंने प्रभु काल अनन्त बिताया है।
शिवराजा अब बनूँ शीघ्र यह भाव समाया है॥ 1013॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. सकल विश्व को युगपत् जाने केवलज्ञान धरें।
तीन लोक के अधिपति प्रभु को नित्य प्रणाम करें॥ 1014॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. मल तीनों ही विनाश करके निर्मल आप हुए।
भक्त आपकी समीपता पाकर निष्पाप हुए॥ 1015॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. ये तव दिव्यछवि लख करके ऐसा लगता है।
अपलक निरखूँ नाथ आपको मन यह कहता है॥ 1016॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सन्मति दाता अज्ञजनों को सत्पथ बतलाते।
निकट भव्य ही मुक्ती के उस पथ पर चल पाते॥ 1017॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विनम्र होता भव्य जीव जो वह मुक्ती पाता।
बिना झुके कोई भी नर ऊँचा ना उठ पाता॥ 1018॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. धाराप्रवाह बहती प्रभु में पूर्णज्ञान धारा।
भव्यजनों ने इसमें बहकर तप अंगीकारा॥ 1019॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. नुति अर्थात् करें भक्ति सब सुरगण मिल करके।
थिरक-थिरक कर भक्ति करें कर जोड़े झुक-झुक के॥ 1020॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भाव भरे प्रासुक द्रव्यों से भक्त करें अर्चा।
देख प्रभु की वीतराग छवि मन मयूर नाचा॥ 1021॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. वाह-वाह करके सुरपति भी दिव्यध्वनि सुनता।
कब नर होकर मुनि बन जाऊँ यही भाव करता॥ 1022॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. दारुण दुख भोगे हैं मैंने नर्क पशु गति में।
कब सौभाग्य जगे मेरा पाऊँ पंचम गति मैं॥ 1023॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. आस्तां दूर रहे तव स्तव मैं नाम मात्र रट लूँ।
अपार भवदधि भक्ति नाव से अतिशीघ्र तर लूँ॥ 1024॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्तां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. जले बीज से वृक्ष न उगता सभी जानते हैं।
कर्म जले तो जन्म न लें प्रभु सभी मानते हैं॥ 1025॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. मनोज्ञ मूरत प्रभु की ऐसी बार-बार देखूँ।
इन नैनों को सार्थक करने प्रभु को अवलोकूँ॥ 1026॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. भवि भागन वश वाणी खिरती प्रभु की हितकारी।
जो पीते प्रभु वचनामृत को हो शिव अधिकारी॥ 1027॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वर्षा ऋतु में थिर रहकर मुनि चौमासा करते।
सिद्धालय में पार्श्वप्रभु जी सदा सुथिर रहते॥ 1028॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तिग्म[1] उदित होता प्रातः पर अस्त शाम ढलते।
जिनरवि अस्त न होय कदापि सदा उदित रहते॥ 1029॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तेजपुंज हैं ज्ञान दिवाकर वन्दन तुम्हें हजार।
हाथ जोड़कर अर्ज करूँ करिए मेरा उद्धार॥ 1030॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तरस रहे सावन भादों सम नयन हमारे नाथ।
प्रभु प्रत्यक्ष दर्श बिन बीते कैसे दिन औ रात॥ 1031॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रुचि जगाई मोक्षमार्ग की दिव्य वचन द्वारा।
चलूँ आपके बतलाए पथ तजकर परिवारा॥ 1032॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. सूर्य

25. रटते-रटते नाम आपका आया अब द्वारे।
तम से घिरा हुआ हूँ स्वामी कर दो उजियारे॥ 1033॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. समर्प्य प्रभु को अपना जीवन अर्पण करता हूँ।
भक्त समर्पक बनकर भगवत् पद में नमता हूँ॥ 1034॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. शोभित हो प्रभु गन्धकुटी पर बारह सभा भरी।
दिव्य औषधि सम प्रभु-मुख से वाणी अमिय झरी॥ 1035॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. कः अर्थात् कौन इस जग में सदा सुखी रहता।
एक पल सुख सौ पल दुख के जग में जीता मरता॥ 1036॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. अभ्युदय को प्राप्त कर लिया निज पुरुषारथ से।
मैं भी चलूँ आपके बतलाए पावन पथ पे॥ 1037॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'अभ्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. युद्ध किए बिन शस्त्र लिए बिन कैसे प्रभु जीते।
कर्म शत्रु को हरा आप रस निजानुभव पीते॥ 1038॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'युद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. गतियाँ घूमी चार चौरासी लख योनि भटका।
दुर्लभता से आज मिला है दर्शन जिनवर का॥ 1039॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तेरा इक आतम है केवल प्रभु ने कहा मुझे।
अब निज आतम औ जिन बिन कुछ और नहीं सूझे॥ 1040॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दिग् दिगन्त तक पार्श्व नाम की फैली कीर्ति है।
नाथ आपके नाम स्मरण से मिलती शक्ति है॥ 1041॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. नव जागृति पाई भक्तों ने तव दर पर आकर।
मन में अति आनन्द हुआ इस विधान को रचकर॥ 1042॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. परिवर्तन कर पंच जगत में अति दुख को पाया।
दुःख विनाशक बूटी पाने चरण-शरण आया॥ 1043॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तौर तरीका प्रभु-भक्ति का मैं कुछ ना जानूँ।
कहाँ आप औ कहाँ अज्ञ मैं कुछ ना पहचानूँ॥ 1044॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. सभा लगी बारह त्रय गति के जीव यहाँ आए।
समवसरण में दिव्यध्वनि सुन शिवमारग पाए॥ 1045॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. महान हैं निर्दोष प्रभुवर के वच शीतल हैं।
नाथ आपसे गौरवशाली भारत भूतल है॥ 1046॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. हीरा पन्ना नीलम आदिक चरण चढ़ाते हैं।
जड़ रत्नों को चढ़ा नृपति रत्नत्रय पाते हैं॥ 1047॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ही' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रुका पाप का बन्धास्रव जिनने प्रभु भक्ति की।
संवर और निर्जरा करके शाश्वत मुक्ती ली॥ 1048॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. हो जाता है जिन-भक्ति से भक्त स्वयं भगवान।
दोष अठारह मिटा स्वयं ही हो अनन्त गुणवान॥ 1049॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. गुणेऽपि गुणधारी होकर भी दोषी क्यों हूँ नाथ।
निर्दोषी होने को भगवन् तव चरणों में माथ॥ 1050॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. किंकिणी वीणा झालर बजते देवों के द्वारा।
मधुर ध्वनि से गूँज उठा है समवसरण सारा॥ 1051॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. वागीश्वर कहलाते स्वामी वचन सुधा बरसाय।
जनम-जनम की प्यास बुझाने भविजन शरणा पाय॥ 1052॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. विघ्न टले आगत बाधाएँ टलती भक्ति से।
अतः करें श्रद्धा से भक्ति भविजन शक्ति से॥ 1053॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. बोधि समाधि देना भगवन् यही प्रार्थना है।
नाथ आपका पथ अपनाऊँ यही भावना है॥ 1054॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. धर्मराज पारस जिनवर ने कर्मराज क्षय कर।
परमानन्दी सुख पाया है शिवरमणी वर कर॥ 1055॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मुख्य स्वयंभू गणधर श्रोता महासेन नामी।
मुख्य आर्यिका सुलोचना थी सुनती जिनवाणी॥ 1056॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. परभव सुधारने को भगवन् पूजन करता हूँ।
वर्तमान में शान्ति पाने सुमरन करता हूँ॥ 1057॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. यान ज्ञान है अनुपम प्रभु का पहुँच गए शिवधाम।
पथदर्शक प्रभुवर स्वीकारो मेरा नम्र प्रणाम॥ 1058॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. तिरती है नैया भव्यों की आप नाम से ही।
चाहे कितनी आँधी तूफाँ हो गहरी खाई॥ 1059॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नव द्वारों से मल बहता फिर भी तन से है नेह।
प्रभु कहें तज देह नेह तू हो जा परम विदेह॥ 1060॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. जीवनशैली प्रभु की अद्भुत आकर्षित करती।
भूले भटके जीवों को शिवमारग दर्शाती॥ 1061॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. वन्दनीय हो गई धरा प्रभु ने तप जहाँ किया।
बड़भागी वह श्रावक जिनके गृह आहार लिया॥ 1062॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. लोकालोक जानते प्रभु जी फिर भी मान नहीं।
अज्ञ मान करता जिसको निज का भी ज्ञान नहीं॥ 1063॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. एकः सदा शाश्वता जिनवर शान्त स्वरूपा हो।
मेरे आत्म-भवन में भगवन् एक बार आओ॥ 1064॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अशोक तरु भी जिन सन्निधि पा शोक रहित होता।
पार्श्वप्रभु की समीपता से भवि विधि-मल धोता॥
रोग-शोक का क्षय करने मैं आया चरणन में।
जल फलादि का अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ कर में॥19॥

ॐ ह्रीं श्रीं अशोकवृक्षविराजमानाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 20

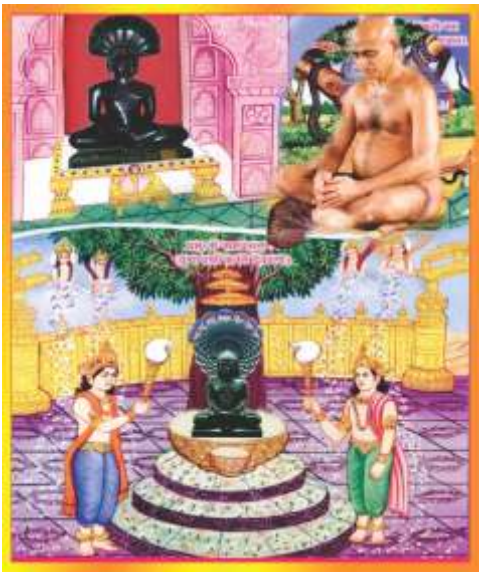

पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य

चित्रं विभो कथमवाङ्मुख-वृन्तमेव
विष्वक्पतत्यविरला सुर-पुष्प-वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि॥ 20॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

देव निरन्तर बरसाते हैं नभ से दिव्य सुमन।
ऊपर रहे पाँखुरी क्यों नीचे जाते बन्धन॥
सच है जो विद्वान प्रभु के हरदम निकट रहे।
ऊर्ध्वमुखी हो सिद्ध बने वे विधि का नाश करे॥
पुष्पवृष्टि यह प्रातिहार्य मन सुमन खिलाता है।
जनम-जनम के दुःख संकट से मुक्ति दिलाता है॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 20॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं।

आशीर्विषर्द्धिसंयुक्तान्, समर्थान् क्षमयाचलान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं आशीर्विषेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अडिल्ल छन्द

1. चित्त मेरु सम सुदृढ़ करने आ गया।
नाथ आपका स्वरूप मन को भा गया॥
सर्व प्रियङ्कर पार्श्वप्रभु की अर्चना।
करूँ आज मैं तीन योग से वन्दना॥1065॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मन्त्रं जो जपते हैं प्रभुवर आपका।
उनको मारग मिल जाता शिवधाम का॥ सर्व०॥ 1066॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. विद्याएँ प्रभुवर ने सारी प्राप्त की।
विवाद की जड़ राग प्रवृत्ति नाश की॥ सर्व०॥ 1067॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. भोर हुई यूँ लगा आपकी शरण आ।
हुआ उजाला मन में सारा भ्रम नशा॥ सर्व०॥ 1068॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. करके सारे कार्य हुए कृतकृत्य हैं।
नाथ आपने पाया शाश्वत सत्य है॥ सर्व०॥ 1069॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. थर्राता दिल जग में हिंसा देखकर।
शीघ्र बचा लो पापों से हे क्षेमकर॥ सर्व०॥ 1070॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. महाभाग्य से जिनशासन हमको मिला।
भव-भव से मुरझाया ज्ञान कमल खिला॥ सर्व०॥ 1071॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. वाङ्मय गङ्गा मन का मैल धोती है।
जिनवचनों को सुनकर सिद्धि होती है॥
सर्व प्रियङ्कर पार्श्वप्रभु की अर्चना।
करूँ आज मैं तीन योग से वन्दना॥1072॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वाङ्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. मुकुलित कमल खिले सूरज की किरण से।
मुरझाया मन कमल खिला प्रभु वचन से॥ सर्व०॥ 1073॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. खगपति नरपति सुरपति प्रभु के चरण में।
आते हैं सब भक्ति से पूजन करने॥ सर्व०॥ 1074॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वृहद् गुणों का वर्णन मैं कैसे करूँ ।
मात्र आपके गुण का मैं वन्दन करूँ॥ सर्व०॥ 1075॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. सन्त आपकी शरण में आ सुख पाते।
संस्कृत प्राकृत में भक्ति कर हर्षाते॥ सर्व०॥ 1076॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. मेघ बरसते ही धरा शीतल होती।
प्रभु-वच मेघ बरसने से शान्ति मिलती॥ सर्व०॥ 1077॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. वहम्-अहम् सुख चैन चुराने वाले हैं।
ज्ञान त्याग भवसिन्धु तिराने वाले हैं॥ सर्व०॥ 1078॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. विष्वक् यानि सर्व ओर खिरते सुमन।
जयकारों से गूँज उठा है भू-गगन॥ सर्व०॥ 1079॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'विष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. वक्त-वक्त पर भक्त प्रभु के दर आते।
दर्शन कर प्रश्नों के उत्तर पा जाते॥
सर्व प्रियङ्कर पार्श्वप्रभु की अर्चना।
करूँ आज मैं तीन योग से वन्दना॥1080॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. पवन प्रभु के तन को छू कर इठलाती।
प्रभु निकट आ भव्य आतमा सुख पाती॥ सर्व०॥ 1081॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तनधारी जीवों का सुख तो नश्वर है।
अव्याबाध सुखी पारस परमेश्वर हैं॥ सर्व०॥ 1082॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. त्यजन योग्य परद्रव्यों को प्रभु ने तजा।
तभी स्वानुभूति का मधुरिम वाद्य बजा॥ सर्व०॥ 1083॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. विरला प्राणी आप शरण में आ सके।
प्रभु के पथ पर कोई-कोई चल सके॥ सर्व०॥ 1084॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रवि की किरणें उष्णता से युक्त हैं।
नाथ आपकी ज्ञान-किरण सुख युक्त है॥ सर्व०॥ 1085॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. लाख यत्न करने पर जिन-दर दुर्लभ है।
जिनशासन को पाना कितना मुश्किल है॥ सर्व०॥ 1086॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सुमति प्रकाशक पंचम गति दाता तुम्हीं।
निस्वारथ प्रभु बन्धु पितु माता तुम्हीं॥ सर्व०॥ 1087॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रतिपति[1] ने जीता है सारे जगत को।
किन्तु आपके निकट झुकाये नज़र को॥
सर्व प्रियङ्कर पार्श्वप्रभु की अर्चना।
करूँ आज मैं तीन योग से वन्दना॥1088॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. पुष्पाञ्जली बिखेरे सारी देवियाँ।
उत्तम द्रव्य चढ़ाएँ भर-भर थालियाँ ॥ सर्व०॥ 1089॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पुष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. परम पारिणामिक भावों को पा लिया।
नाथ आपका रूप हृदय में भा गया॥ सर्व०॥ 1090॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. वृष अर्थात् सु-धर्म धुरन्धर आप हैं।
शरणागत के मेट रहे सन्ताप है॥ सर्व०॥ 1091॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. वृष्टिः होती धर्मामृत की जिनमुख से।
हरपल पीकर भव्य रहते हैं सुख से॥ सर्व०॥ 1092॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्टिः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. त्वद् भक्ति से अनन्त शक्ति मिलती है।
उदयागत कर्मों की बाधा टलती है॥ सर्व०॥ 1093॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. गोशीर्षादि चन्दन से पूजूँ तुम्हें।
निष्ठा का शुभ अर्घ्य चढ़ाता हूँ तुम्हें॥ सर्व०॥ 1094॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. चरम शरीरी तीर्थङ्कर की वन्दना।
हर्षित होता मन करके आराधना॥ सर्व०॥ 1095॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. कामदेव

32. रेसिन्दीगिरी पर आए हैं पार्श्वजिन।
समवसरण में भक्त आ रहे रात-दिन॥
सर्व प्रियङ्कर पार्श्वप्रभु की अर्चना।
करूँ आज मैं तीन योग से वन्दना॥1096॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. सुप्रभात तब हुआ दर्श जब हो गया।
जिनमूरत लख धन्य-धन्य मैं हो गया॥ सर्व०॥ 1097॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. महीपाल नाना थे जिनके तापसी।
तज मिथ्यातम मटकी फोड़ी पाप की॥ सर्व०॥ 1098॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. नमः-नमः की ध्वनि सुनाई देती है।
जय हो-जय हो की ध्वनि भी आती है॥ सर्व०॥ 1099॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. सांसारिक बन्धन को तजना चाहता।
जुड़े प्रभु से नाता ये ही सोचता॥ सर्व०॥ 1100॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यथाशक्ति तप करके कर्म जलाना है।
तपोपूत प्रभु की शरण ही पाना है॥ सर्व०॥ 1101॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दिवि[1] से देव-देवियाँ आते दर्शन को।
कल्पतरु के दिव्य द्रव्य ले अर्चन को॥ सर्व०॥ 1102॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वासना की आग जलाती अज्ञ को।
वीतरागता शान्ति दिलाती विज्ञ को॥ सर्व०॥ 1103॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. मुमुक्षु जन को केवल मुक्ती चाह है।
पाना केवल नाथ आपकी राह है॥ सर्व०॥ 1104॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. स्वर्ग

41. नीरवता में प्रभु का ध्यान आता है।
अतिशीघ्र उपयोग शान्त हो जाता है॥
सर्व प्रियङ्कर पार्श्वप्रभु की अर्चना।
करूँ आज मैं तीन योग से वन्दना॥1105॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. शब्दावलियाँ भक्ति में कम पड़ जातीं।
नन्त गुणों को नहीं लेखनी लिख पाती॥ सर्व०॥ 1106॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. गति-आगति से मुक्त हुए जिनराज हैं।
जिनगुण से हो गया मुझे अनुराग है॥ सर्व०॥ 1107॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्वच्छ सरल भावों से कर्म नशते हैं।
सच्चे भक्त हृदय में आप बसते हैं॥ सर्व०॥ 1108॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्छ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. शान्ति पाने मैंने कार्य किए कई।
किन्तु अशान्ति और-और बढ़ती गई॥ सर्व०॥ 1109॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. अनूप उपमातीत प्रभु जी हो गए।
देह रहित होकर निज में ही खो गए॥ सर्व०॥ 1110॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नश्वर सुख तज अविनाशी सुख पा लिया।
यह सम्यक् पुरुषार्थ भक्त को भा गया॥ सर्व०॥ 1111॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. महार्चना करके मन अति हर्षा रहा।
कई जन्मों का पुण्य उदय मम आ गया॥ सर्व०॥ 1112॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. धवल वृक्ष के नीचे प्रभु दीक्षा धरी।
पूर्णज्ञान होने पर दिव्यध्वनि खिरी॥ सर्व०॥ 1113॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. एक अकेले ज्ञान कक्ष में रहते हो।
सिद्धिवधू से हर पल नाथ मिलते हो॥
सर्व प्रियङ्कर पार्श्वप्रभु की अर्चना।
करूँ आज मैं तीन योग से वन्दना॥1114॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ए' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वपु वनिता वस्त्रादिक अन्य पदार्थ हैं।
मैं हूँ आतम एक यही परमार्थ है॥ सर्व०॥ 1115॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. हितङ्करी वाणी है जिनवर आपकी।
जो सुनते टूटे जंजीर पाप की॥ सर्व०॥ 1116॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. बन्धन सारे प्रभु-भक्ति से टूटते।
अतः आपके चरणों में हम बैठते॥ सर्व०॥ 1117॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. धरणेन्द्रादि तव चरणों में आ खड़े।
नाथ आपके गुण की महिमा गा रहे॥ सर्व०॥ 1118॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नाता लगता प्रभु से बहुत पुराना है।
डूबी मेरी नैया नाथ तिराना है॥ सर्व०॥ 1119॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. निजाधीन सुख पाने का ही लक्ष्य है।
पथ-दर्शन करने में जिनवर दक्ष हैं॥ सर्व०॥ 1120॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

सुमन ऊर्ध्वमुखी नभ से सुर बरसाते।
प्रभु समीपता से भविजन मुक्ती पाते॥
पुष्पवृष्टि कर सुरगण का मन खिल रहा।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्तों का मन मुदित हुआ॥20॥

ॐ ह्रीं श्रीं सुरपुष्पवृष्टिशोभिताय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।